3

कलाकारों और विद्वानों का योगदान

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में हमने लोक और आदिवासी चित्रकला रूपों के विषय में जाना। इस पाठ में हम विद्वानों और कलाकारों के योगदान के विषय में जानेंगे। भारतीय आदिवासी एवं लोककला को देश एवं विदेश में लोकप्रिय बनाने तथा उसके कलात्मक एवं सांस्कृतिक महत्व से जन-जन को परिचित कराने मे कुछ भारतीय एवं विदेशी विद्वानों का अविस्मरणीय योगदान रहा। विशेष तौर पर 20वीं सदी के आरंभ में डॉ. वैरियर एल्विन, स्टैला क्रेमरिश, कमला देवी चट्टोपाध्याय एवं बाद में पुपुल जयकर, हाकू शाह, राजीव सेठी, जगदीश स्वामीनाथन जैसे विद्वानों के अथक प्रयासों से अनेक भारतीय आदिवासी एवं लोककलाएँ, कला जगत के सामने आई एवं अनेक आदिवासी एवं लोक कलाकार अपनी पारंपरिक कला प्रतिभा के कारण विश्व में प्रसिद्धि पा सके।

पिछले चार दशकों में पारंपरिक आदिवासी एवं लोककलाओं के क्षेत्र में कुछ कलाकारों ने अपने व्यक्तिगत योगदान से इन कलाओं को नई बुलंदियों तक पहुँचाया और उनकी इन विलक्षण प्रतिभा को भारत सरकार एवं अन्य संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया। ऐसे ही कुछ कलाकार हैं- वार्ली चित्रकार जीव्या सोमा माशे, गोंड चित्रकार जनगढ़ सिंह श्याम, भील चितेरी भूरी बाई एवं लाडो बाई, राठवा पिठौरा चित्रकार प्रेश भाई राठवा, पटुआ चित्रकार गौरी देवी, फड़ चित्रकार श्रीलाल जोशी और शान्तिलाल जोशी, मधुबनी चित्रकार सीता देवी और गंगा देवी आदि।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- भारतीय आदिवासी एवं लोककला को विश्व पटल पर लाने हेतु किन विद्वानों एवं कलाकारों का योगदान स्पष्ट कर सकेंगे;
- उन विदेशी विद्वानों का परिचय प्रस्तुत कर पायेंगे जिन्होंने भारतीय आदिवासी एवं लोककला को प्रोत्साहन दिया;
- उन भारतीय विद्वानों के बारे में परिचर्चा कर सकेंगे, जिन्होंने आदिवासी एवं लोककला के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई;

- उन आदिवासी एवं लोक कलाकारों के योगदान से परिचित होंगे, जिन्होंने विश्व कला जगत में अपनी छाप छोड़ी;
- विश्व कला जगत में भारतीय आदिवासी एवं लोककला के महत्त्व पर चर्चा कर सकेंगे।

3.1 स्टैला क्रेमरिश (1896 से 1993)

प्रिय शिक्षार्थी, अब हम लोककला के क्षेत्र के कुछ विद्वानों और कलाकारों के विषय में जानेंगे।

शीर्षक : स्टैला क्रेमरिश
जन्मस्थान : ऑस्ट्रिया
समय : 1896 से 1993
योगदान : भारतीय कला एवं लोककला

संक्षिप्त परिचय

स्टैला क्रेमरिश 1896-1993: स्टैला क्रेमरिश मूलरूप से एक ऑस्ट्रियाई कला इतिहासकार थी जो भारतीय कला एवं लोककला पर शोध के लिए विख्यात हुईं। 1921 में भारतवर्ष में स्वदेश प्रेम एवं भारतीयता की लहर जागृत हो गई थी एवं विदेशी कला, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आन्दोलन प्रारंभ हो गया। उस समय रबीन्द्रनाथ टैगोर ने इन्हें शान्तिनिकेतन कला भवन में कला इतिहास के अध्यापन हेतु आमन्त्रित किया। अपने शिक्षण काल में इनका परिचय भारतीय कला एवं लोककला से हुआ तथा इनकी कला विशेषताओं ने इन्हें आकृष्ट किया। इनसे प्रभावित होकर इन्होंने कई विख्यात पुस्तकों की रचना की।

चित्र 3.1: स्टैल क्रेमरिश

सामान्य विवरण

स्टैला क्रेमरिश ने भारतीय कलाकारों एवं कला के अध्ययनकताओं को यूरोप में हो रहे कला आंदोलनों प्रभाववाद, उक्रार प्रभाववाद और धनवाद से परिचित कराया। इनसे भारतीय अब तक अपरिचित थे। उन्होंने छात्रों को बताया कि एक कलाकृति को कैसे देखा जाए, कैसे उसकी विषयवस्तु और संयोजन को परखा जाए। सन 1947 में विश्व भारती में उनको देशकोत्तम सम्मान से एवं 1982 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। उन्होंने दक्षिण एशियाई कलाकृतियों का एक महत्वपूर्ण संग्रह किया और 1978 में 'अननोन इंडिया' नामक प्रसिद्ध प्रदर्शनी फिलेडेल्फिया म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट, अमेरिका में आयोजित की। इस प्रदर्शनी में भारतीय राजसी एवं आम जीवन में प्रचलित कला वस्तुओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति को प्रस्तुत किया गया। इस प्रदर्शनी ने पहली बार पश्चिमी जगत का ध्यान भारतीय देशज कलाओं की ओर खींचा। उनके द्वारा लिखी गई महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं- 'एक्सप्लोरिंग इंडियाज सैक्रेड आर्ट', 'द हिंदू टेंपल', 'अननोन इंडिया', 'रिचुअल आर्ट इन ट्राइब', 'विलेज' आदि।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. स्टैला क्रेमरिश कहाँ के कला इतिहास की विशेषज्ञ थीं?
2. श्री रबीन्द्रनाथ टैगोर ने स्टैला क्रेमरिश को 1921 में कहाँ अध्यापन हेतु आमंत्रित किया?
3. स्टैला क्रेमरिश को भारत सरकार ने किस सम्मान से सम्मानित किया?
4. स्टैला क्रेमरिश द्वारा लिखी महत्वपूर्ण पुस्तकों के नाम लिखिए?

3.2 डॉ. वैरियर एल्विन (29 अगस्त 1902 से 22 फरवरी 1964)

शीर्षक : **डॉ. वैरियर एल्विन**

स्थान : **इंगलैंड**

समय : **29 अगस्त 1902 से 22 फरवरी 1964**

योगदान : **भारतीय आदिवासी कला एवं संस्कृति**

संक्षिप्त परिचय

डॉ. वैरियर एल्विन इंगलैंड के एक मानव विज्ञानी थे। वे भारत में ईसाई मिशनरी के रूप में आए थे, परंतु भारतीय समाज की सरलता एवं धार्मिक परंपराओं ने उन्हें अपनी ओर आकृष्ट किया। वे महात्मा गांधी के अनुयायी बन गए। इन्होंने मध्य भारत के बैगा एवं गोंड तथा मध्यप्रदेश और उड़ीसा के आदिवासियों की लोककला एवं लोक परंपरा का अध्ययन किया। इनकी इन्हीं विशेषताओं

के फलस्वरूप भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने इन्हें भारत के उत्तरपूर्वी आदिवासी मामलों का सलाहकार नियुक्त किया। आदिवासी कला संस्कृति पर इन्होंने कई महत्वपूर्ण किताबें लिखीं।

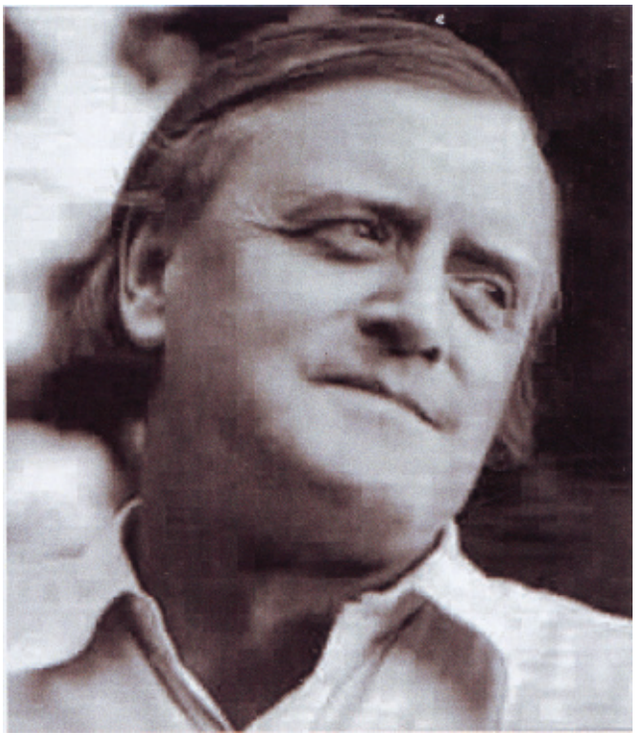

चित्र 3.2: डॉ. वैरियर एल्विन

सामान्य परिचय

डॉ. वैरियर एल्विन ने मध्य भारत के बैगा एवं गोंड तथा उत्तर पूर्वी भारत एवं उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश के अनेक आदिवासियों एवं उनकी पारंपरिक कलाओं पर शोधकार्य किया, जिसके लिए उन्हें विशेष रूप से जाना जाता है। उन्हें भारतीय आदिवासी कला एवं संस्कृति पर विशेषज्ञ माना जाता है। उनकी लिखी पुस्तक 'दि ट्राइबल वर्ल्ड ऑफ़ वैरियर एल्विन' को 1975 में साहित्य अकादमी सम्मान दिया गया।

आदिवासी संस्कृति एवं कलाओं पर 'सांग्स ऑफ़ दि फोरेस्ट', 'दि अगारिया', 'दि एबोरीजनल्स', 'फोक सांग्स ऑफ़ मैकल हिल्स', 'फोक सांग्स ऑफ़ छत्तीसगढ़', 'दि मुरिया एण्ड देयर घोटुल', 'दि ट्राइबल आर्ट ऑफ़ मिडिल इंडिया', 'ट्राइबल मिथस् ऑफ़ उड़ीसा', 'दि आर्ट ऑफ़ दि नार्थ-ईस्ट फ्रंटियर ऑफ़ इंडिया', 'दि ट्राइबल वर्ल्ड ऑफ़ वैरियर एल्विन', फोक पेटिंस ऑफ़ इंडिया', 'द बैगा' आदि उनकी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं, जिनसे भारतीय आदिवासी संस्कृति एवं कला की गहरी जानकारी मिलती है और जो इस विषय पर किए गए आरंभिक शोधकार्यों में से एक हैं।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. डॉ. वैरियर एल्विन को किस कला संस्कृति का विशेषज्ञ माना जाता है?
2. डॉ. वैरियर एल्विन ने मध्य भारत के किन आदिवासियों की कला-संस्कृति पर कार्य किया?
3. डॉ. वैरियर एल्विन को किस पुस्तक के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला?

क्रियाकलाप

आदिवासी तथा लोककला के प्रति डॉ. वैरियर एल्विन के योगदान के विषय में जानने के लिये निकटतम पुस्तकालय जाइए। भारतीय आदिवासी और ग्रामीण संस्कृति पर लिखी उनकी किसी एक पुस्तक पर समीक्षा लिखिए।

.....

.....

.....

.....

3.3 श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय

शीर्षक : **श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय**

जन्म स्थान : **मंगलूरू, कर्नाटक**

समय : **3 अप्रैल 1903 से 29 अक्तूबर 1988**

योगदान : **भारतीय लोककलाओं के प्रति लोगों का आकर्षण जगाना**

संक्षिप्त परिचय

श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय 20 वर्ष की अल्प आयु में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर 1923 में सेवादल की महिला शाखा की प्रमुख बनीं। भारतीय लोककला, शिल्पकला, नाट्य एवं अन्य पारंपरिक कलाओं के प्रति उनके आकर्षण ने उनका ध्यान इन क्षेत्रों की ओर खींचा। इसलिए वे इन क्षेत्रों में अपना योगदान दे पाई। इन्होंने भारतीय लोक कलाओं के प्रति लोगों में आकर्षण जगाने के लिए कई विश्वस्तरीय किताबों की रचना की।

सामान्य परिचय

पद्म विभूषण, पद्म भूषण एवं मैगसेसे पुरस्कारों से सम्मानित कमला देवी चट्टोपाध्याय स्वतंत्र भारत की अत्यंत सम्मानित विदुषी हैं जो न केवल स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक थीं, बल्कि

उन्होंने भारतीय पारंपारिक शिल्प कलाओं के पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं महिला सशक्तीकरण एवं उनके सामाजिक और आर्थिक उन्नयन हेतु भारत में सहकारिता आन्दोलन की नींव डाली।

चित्र 3.3: श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय

उनके प्रयासों से ही नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा, संगीत नाटक अकादेमी, सेन्ट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज इम्पोरियम तथा क्राफ्टस कौंसिल ऑफ़ इंडिया की स्थापना हो सकी। उनके अथक प्रयासों से ही 200 वर्षों के विदेशी शासन में जर्जर हो चुकी भारतीय शिल्प परंपरा के पुनर्जीवन का कार्य आरंभ हो सका।

देश की आजादी के उपरांत उन्होंने देश में शिल्प संग्रहालयों की एक श्रृंखला स्थापित की जिसमें दिल्ली का नाट्य शिल्प संग्रहालय प्रमुख है। उन्होंने परम्परिक शिल्पियों हेतु राष्ट्रीय पुरस्कारों का आरंभ किया। उनके प्रयासों से ऑल इंडिया हैण्डीक्राफ्ट्स बोर्ड की स्थापना हुई और वे उसकी प्रथम अध्यक्ष बनाई गईं। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं; जिसमें- 'दी क्राफ्टस ऑफ़ इंडिया', 'इंडियन कारपेट एण्ड फ्लोर कवरिंग्स', 'इंडियन एम्ब्रायडरी', 'इंडियाज क्राफ्ट ट्रेडीशन', 'इंडियन हैण्डीक्राफ्ट्स', 'ट्रेडीशन ऑफ़ इंडियन फोक डांस' एवं 'द ग्लोरी ऑफ़ इंडियन हैण्डीक्राफ्टस' प्रमुख हैं।

पाठगत प्रश्न 3.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकरा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कमला देवी चट्टोपाध्याय का जन्म स्थान है-

   (i) मंगलूरू (कर्नाटक) (ii) उदयपुर (राजस्थान)

   (iii) पुरूलिया (पश्चिम बंगाल) (iv) लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

2. कमला देवी चट्टोपाध्याय की लिखी पुस्तक का नाम है-

   (i) क्रॉफ्ट ऑफ़ इण्डिया (ii) इंडियन आर्ट

   (iii) इंडियन म्यूजिक (iv) ड्राइंग एण्ड पेंटिंग

3.4 श्रीमती पुपुल जयकर

शीर्षक : श्रीमती पुपुल जयकर
जन्म स्थान : इटावा, उत्तर प्रदेश
समय : 11 सितंबर 1915 से 29 मार्च 1997
योगदान : भारतीय पारंपरिक एवं ग्रामीण कला

संक्षिप्त परिचय

श्रीमती पुपुल जयकर का जन्म एक गुजराती ब्राह्मण परिवार में हुआ। एक गुजराती ब्राह्मण परिवार में जन्मी पुपुल जयकर की पहचान एक ऐसे संस्कृतिकर्मी एवं लेखक के रूप में है, जिन्होंने भारतीय पारंपरिक एवं ग्रामीण कलाओं, विशेष रूप से हथकरघा एवं हस्तकलाओं के पुनर्जीवन के लिए कार्य किया।

सामान्य परिचय

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में पारंपरिक आदिवासी, लोककलाओं एवं हस्तशिल्प के पुनरूद्धार हेतु अपने अथक प्रयासों के लिए श्रीमती पुपुल जयकर का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने पारंपरिक भारतीय कलाओं को पश्चिमी जगत में लोकप्रिय बनाने हेतु 1980 के दशक में फ्रांस, अमेरिका और जापान में भारत महोत्सव की एकशृंखला आयोजित कराई जो अत्यधिक प्रभावशाली रही।

पद्म भूषण से सम्मानित श्रीमती पुपुल जयकर तत्कालीन भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी एवं राजीव गाँधी की सांस्कृतिक सलाहकार रहीं और लगभग 40 वर्षों तक देश के सांस्कृतिक जगत को अपने विचारों एवं कार्यों से लाभान्वित किया। उन्होंने मिथिला (मधुबनी) चित्रों के पुनरुद्धार; राष्ट्रीय हस्तशिल्प एवं हथकरघा संग्रहालय, इंटैक; इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कलाकेंद्र और राष्ट्रीय फैशन प्रोद्योगिकी संस्थान आदि की स्थपना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय पारंपरिक कलाओं एवं हस्तशिल्प पर अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें 'दि अर्दन ड्रम्स', 'दि अर्थ मदर' एवं 'टैक्सटाइल्स एण्ड एम्ब्रायडरीज़ ऑफ़ इंडिया' प्रमुख हैं।

चित्र 3.4: श्रीमती पुपुल जयकर

पाठगत प्रश्न 3.4

1. श्रीमती पुपुल जयकर ने विदेशों मे भारतीय पारंपरिक कलाओं को लोकप्रिय बनाने हेतु क्या किया?
2. श्रीमती पुपुल जयकर का जन्म स्थान कहाँ है?
3. श्रीमती पुपुल जयकर ने किस संग्रहालय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
4. श्रीमती पुपुल जयकर की लिखी दो प्रमुख पुस्तकों के नाम लिखिए।

3.5 श्रीमती सीता देवी

शीर्षक : श्रीमती सीता देवी
जन्म स्थान : मधुबनी
समय : 1914 से 2005
योगदान : मधुबनी चित्र

संक्षिप्त परिचय

सन् 1914 में बिहार के वर्तमान मधुबनी जिले में जन्मी सीता देवी, मधुबनी शैली की उन महान चित्रकारों में अग्रणीय मानी जाती हैं, जिन्होंने इस लोककला को गाँव की दीवारों से उतारकर कागज़ों पर बनाया और अपनी विलक्षण प्रतिभा से उन्हें नए आयाम दिए। उनकी कलात्मक प्रतिभा को सम्मानित करने हेतु 1969 में बिहार सरकार ने उन्हें हस्तशिल्प का राज्यस्तरीय पुरस्कार, 1975 में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार, 1981 में पद्मश्री तथा 1984 में बिहार राज्य सरकार द्वारा बिहार रत्न सम्मान प्रदान किया। सीता देवी को अपने गाँव जितवारपुर में जगत माँ का दर्जा हासिल था। उन्होंने लगभग 1000 लोगों को मधुबनी चित्र बनाने की कला के गुर सिखाए और प्रोत्साहित किया। उनके ही प्रयासों से इस गाँव में प्राथमिक विद्यालय आरंभ हुआ और गाँव तक पक्की सड़क का निर्माण हो सका।

चित्र 3.5: श्रीमती सीता देवी

सामान्य परिचय

सीता देवी के बनाए चित्रों के प्रशंसकों में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद के साथ साथ लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गाँधी, बाबू जगजीवन राम एवं ललित नारायण मिश्र जैसे अग्रणी नेता एवं बुद्धिजीवी सम्मिलित थे।

सीता देवी के कागज़ पर बनाए चित्रों में अधिकांशत: चित्रों का हाशिया सपाट लाल या गुलाबी रंग से अंकित किया गया है तथा हाशिए के ऊपर दोनों कोनों को एक दरवाज़े की भांति सजाया गया है। चित्र के मध्य में मुख्य चरित्र बहुत ही सरल ढंग से अंकित किया गया है। पृष्ठभूमि में वे फूल-पत्तियों की लता या बूटों से मोहक सज्जा करती थीं, जिनके मध्य पक्षी आकृतियाँ

बहुत ही जीवंत दिखाई देती हैं। वे चरित्रों का चेहरा सुस्पष्ट और आँखें विशाल चित्रित करती थीं। बाद में उनके बनाए चित्रों में अधिक विवरणात्मकता देखने को मिलती है। प्रस्तुत चित्र अर्द्धनारीश्वर उनके द्वारा बाद में बनाए गए महत्वपूर्ण चित्रों में से एक है। मिथिला में भगवती गौरी की शक्ति के रूप में उपासना की एक सुदीर्घ परंपरा है। शिव-पार्वती यहाँ आदर्श दम्पती के प्रतीक हैं। सीता देवी को इनकी उपासना और रूपों का पर्याप्त ज्ञान था। उन्होंने भगवती गौरी और महादेव के सर्वोच्च रूपों में से एक अर्द्धनारीश्वर का बहुत की प्रभावशाली चित्रांकन किया है। चित्र में लाल, नारंगी, केसरी-पीला, हल्का काला रंग और गहरा हरा रंग प्रयुक्त किया गया है। काले रंग का रेखांकन सादगी भरा परंतु संयोजित है। हाशिए में सरल पुष्पलता बनाई गई है। समूचा ध्यान आकृतियों पर दिया गया है।

पाठगत प्रश्न 3.5

1. सीता देवी का जन्म कहाँ हुआ?
2. सीता देवी भारत की किस लोकचित्र शैली की चित्रकार थीं?
3. सीता देवी को मधुबनी कला में योगदान के लिए कौन-से सम्मान प्राप्त हुए?

3.6 गुरप्पा चेट्टी

शीर्षक : **गुरप्पा चेट्टी**

जन्म स्थान : **श्रीकालाहस्ती, आंध्र प्रदेश**

समय : **1937**

योगदान : **कलमकारी कला**

संक्षिप्त परिचय

जाने माने कलमकारी कलाकार गुरप्पा चेट्टी का जन्म 1937 में श्रीकालाहस्ती, आंध्र प्रदेश के एक पारंपरिक कलाकार परिवार में हुआ था। बचपन से ही गुरप्पा चेट्टी ने कमलकारी के गुर सीखना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने अपने निष्ठापूर्ण एवं कठोर अभ्यास से इस तकनीक का गहराई से अध्ययन किया और उसमें अभूतपूर्व कुशलता प्राप्त की। कलमकारी में उन्होंने प्रमाणिक और पुराने डिज़ाइनों का ज्ञान प्राप्त किया और परंपरागत सौंदर्यबोध को समझकर अपनी स्वयं की एक विशिष्ट निरूपण शैली विकसित की। वे मानते हैं कि यह कला अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने की भूमिका पुरानी पीढ़ी के श्रेष्ठ कलमकारों की है, अतः वे इस दिशा में प्रयासरत रहते हैं। उन्होंने इस विषय पर तेलुगू एवं अंग्रेज़ी में अनेक पुस्तके लिखीं हैं। तेलुगु में उन्होंने भगवत मणीमाला, व्राथ पानी कलमकारी, भारत रत्नमाला तथा अंग्रेज़ी में 'पुष्पालु' नाम पुस्तक लिखी है। उन्होंने विभिन्न संस्थाओं के साथ जन-साधारण के लिए कलमकारी शिविर आयोजित किए हैं। देश-विदेश में उन्होंने कलमकारी शिल्प कौशल प्रदर्शन कार्यक्रम भी किए हैं।

चित्र 3.6: गुरप्पा चेट्टी

चित्र 3.7

सामान्य परिचय

उनकी कला साधना और कलमकारी के प्रचार-प्रसार में उनके अमूल्य योगदान हेतु उन्हें भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार 1976, शिल्पगुरू सम्मान 2002, तुलसी सम्मान मध्य प्रदेश शासन, 2008 एवं हाल ही में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के समय कलमकारी कला विलुप्त होने की कगार पर थी, परंतु गुरप्पा चेट्टी जैसे कल्पनाशील एवं जुझारू कलाकारों के प्रयास से यह कला पुनर्जीवन प्राप्त कर सकी। गुरप्पा चेट्टी ने न केवल कलमकारी तकनीक एवं चित्रण शैली में अनेक समसामयिक परिवर्तन किए, वरन हस्तचित्रित एवं हस्तरंजित कलमकारी कपड़ों को अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में स्थान दिलाया। कलमकारी वस्त्रों की पहचान पर्यावरण के अनुकूल भी है। इस प्रकार उन्होंने मृतप्राय होती कलमकारी को एक नया जीवन देने के कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

पाठगत प्रश्न 3.6

1. गुरप्पा चेट्टी किस चित्र शैली के प्रसिद्ध चित्रकार हैं?
2. गुरप्पा चेट्टी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
3. कलमकारी में योगदान हेतु भारत सरकार ने गुरप्पा चेट्टी को किस प्रकार सम्मानित किया?
4. गुरप्पा चेट्टी की लिखी पुस्तकों के नाम लिखिए।

3.7 जीव्या सोमा मशे

शीर्षक : जीव्या सोमा मशे

जन्म स्थान : ठाणे जिला, महाराष्ट्र

समय : 1934

योगदान : आदिवासी कला

संक्षिप्त परिचय

1934 में महाराष्ट्र के ठाणे जिले के धामन गाँव में जन्मे जीव्या सोमा मशे एक ऐसी आदिवासी कला परंपरा के चित्रकार हैं, जो केवल स्त्रियों द्वारा की जाती थी। परंतु प्रोत्साहन से आरंभ हुए उनके चित्रकर्म ने न केवल उन्हें, बल्कि वार्ली आदिवासी चित्रकला को एक नई बुलंदी तक पहुँचा दिया। 1975 में मुम्बई की कैमोल्ड आर्ट गैलरी में वार्ली चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। वह जीव्या सोमा मशे का भारतीय कलाजगत से पहला परिचय था। आज वे भारतीय आदिवासी कला के लिविंग लीजैण्ड हैं। आपने विख्यात लोक कलाकार जीव्या सोमा मशे की कुछ कलाकृतियां अवश्य देखी होंगी। आइए, इनके विषय में हम विस्तार में जानें।

सामान्य विवरण

जीव्या सोमा मशे पहले भारतीय वार्ली आदिवासी चित्रकार हैं जिन्हें 1976 में राष्ट्रीय पुरस्कार, 2001 में शिल्पगुरू पुरस्कार, 2009 में नीदरलैण्ड का प्रिंस क्लाउस पुरस्कार तथा 2011 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। वे ऐसे पहले भारतीय आदिवासी चित्रकार है जिनके बनाए चित्रों की प्रदर्शनी भारत की सभी प्रतिष्ठित आर्ट गैलरीज के साथ-साथ विदेशों की अनेक

महत्वपूर्ण आर्ट गैलरीज; जैसे- पैलेस डी मैंटोन, पेरिस में 1976; पॉम्पेदू सेंटर, पेरिस में 1989 एवं 2003; डू सेल्डोर्फ जर्मनी, मिलान इटली में 2004; अमेरिका में 2006 एवं पेरिस में 2007 में आयोजित की गई।

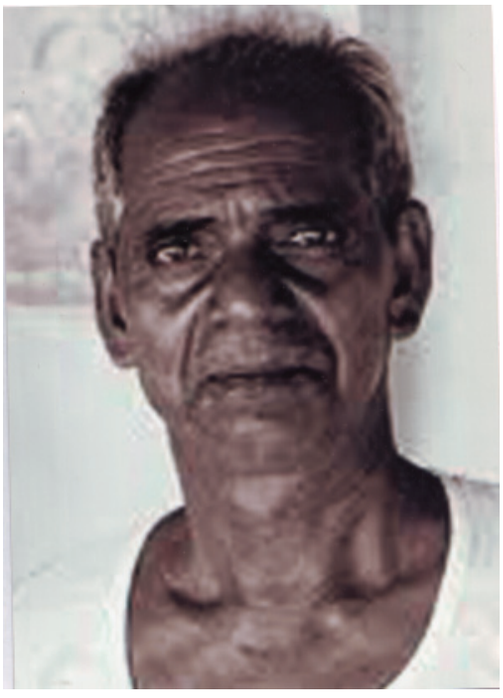

चित्र 3.8: जीव्या सोमा मशे

चित्र 3.9: जीव्या सोमा मशे द्वारा की गई वार्ली चित्र

नीदरलैण्ड में मिले प्रिंस क्लाउस पुरस्कार की प्रशस्ति में कहा गया कि जीव्या सोमा मशे को यह सम्मान एक ऐसी कला भाषा की सृजनात्मक पुनर्खोज के लिए दिया जा रहा है, जो विलुप्त हो रही है। उन्होंने प्रकृति और संस्कृति के मध्य सामंजस्य के वार्ली दर्शन को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया और ज्ञान के इस स्थानीय रूप के समकालीन औचित्य को दर्शाया है। इस प्रकार उन्होंने आदिवासियों एव उनकी कला-संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पाठगत प्रश्न 3.7

सही उत्तर पर निशान लगाए।

1. जीव्या सोमा मशे किस आदिवासी चित्र शैली के चित्रकार हैं?

   (i) कलमकारी (ii) मधुबनी

   (iii) वार्ली चित्र (iv) अमूर्त

2. जीव्या सोमा मशे का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

   (i) महाराष्ट्र, 1934 (ii) पंजाब, 1950

   (iii) उडीशा, 1940 (iv) बिहार, 1955

3.8 जनगढ़ सिंह श्याम

प्रिय विद्यार्थियों, आपने भारत की लोक और आदिवासी कलाओं की कुछ हस्तियों के बारे में जाना। अब हम गोंड कलाकार जनगढ़ सिंह श्याम के बारे में जानेंगे।

शीर्षक : जनगढ़ सिंह श्याम
जन्म स्थान : मध्यप्रदेश
समय : 1960 से 2001
योगदान : गोंड आदिवासी चित्रकला

संक्षिप्त परिचय

मध्य प्रदेश के मण्डला जिले के पाटनगढ़ गाँव में 1960 में जन्मे जनगढ़ सिंह श्याम बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं विलक्षण आदिवासी चित्रकार थे। वे एक अच्छे चित्रकार, मूर्तिकार, भित्ति चित्रकार, बांसुरीवादक और गायक तो थे ही बाद में उन्होंने स्क्रीन प्रिंट लिथोग्राफ़ी भी सीखी और अनेक प्रिंट तैयार किए।

गोंड आदिवासियों की उपशाखा प्रधान आदिवासियों के परिवार में जन्मे जनगढ़ आदिवासी दंतकथाओं का भण्डार थे। 1982 में प्रसिद्ध चित्रकार जगदीश स्वामीनाथन ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और चित्रकरी हेतु प्रोत्साहित किया। अगले कुछ वर्षों में जनगढ़ सिंह श्याम ने अपने परंपरागत आदिवासी सौंदर्यबोध तथा विश्व दर्शन के समन्वय से जो चित्र शैली विकसित की उसने गोंड आदिवासी

कला में एक नये अध्याय को जन्म दिया। कुछ लेखकों ने उनकी इस नवविकसित चित्रण शैली को जनगढ़ कलम का नाम दिया।

चित्र 3.10: जनगढ़ सिंह श्याम

चित्र 3.11: जनगढ़ सिंह श्याम द्वारा बनाया गया गोंड चित्र

सामान्य विवरण

वास्तव में आज जो मध्य प्रदेश के गौण्ड आदिवासी कलाकार चित्र बना रहे हैं, वे जनगढ़ सिंह श्याम द्वारा विकसित चित्रण शैली का विस्तार और अनुकरण है। इस प्रकार जनगढ़ ने गौण्ड आदिवासी कला को न केवल समकालीन कलाजगत में एक नई पहचान दिलाई बल्कि परंपरागत कलाओं में कलाकार की निजी सृजनात्मकता के महत्व को भी रेखांकित किया। जनगढ़ सिंह श्याम उस आदिवासी समुदाय से थे जिनमें भित्ति चित्रण और मिट्टी के काम से घर की दीवारों को सजाने की समृद्ध परंपरा है। परंतु वे अपने देवी देवताओं के मूर्तरूप को अनगढ़ पत्थरों में ही देखते हैं। जनगढ़ ऐसे पहले परधान-गौण्ड चित्रकार बने जिन्होंने अपनी समुदायगत किंवदंतियों में वर्णित देवी-देवताओं को अपनी विलक्षण कल्पनाशीलता से चित्र रूप दिया। उन्हीं के बनाए चित्रों के माध्यम से अनेक अनसुने ओर अनदेखे आदिवासी देवी-देवताओं से दर्शकों का पहला परिचय हुआ। जनगढ़ ने अपनी कलात्मक प्रतिभा से एक निजी चित्रभाषा का विकास किया। वे चित्रों में एक या कुछ आकृतियों का समूह बहुत की सरलता से रखते थे परंतु इन आकृतियों को जिस प्रकार चमकीले रंगों में समरसता से चित्रित करते थे वह विलक्षण है। आकृति में पहले सपाट रंग की पृष्टभूमि तैयार कर वे उस पर विविध रंगों की बुन्दकियों से अद्‌भुत प्रभाव उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त करते थे।

जनगढ़ के चित्रों के विषय पशु-पक्षी और आदिवासी देवी-देवता रहे। जनगढ़ के ये चित्र अनियमित रूप से बनाए गए हैं। जनगढ़ सिंह श्याम को उनके गोंड आदिवासी कला के विकास में योगदान हेतु मध्य प्रदेश शासन द्वारा 1985 में शिखर सम्मान दिया गया। उन्होंने नवनिर्मित मध्य प्रदेश विध ान सभा भवन में बृहदाकार भित्ति चित्र बनाए। उनके चित्रों को अमरीका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी एवं जापान में प्रदर्शित किया गया।

प्रस्तुत चित्र (3.11) जनगढ़ सिंह श्याम द्वारा बनाया गया एक बारहसिंघे का चित्र है, जिसमें बाह्य आकृति के अतिरिक्त वास्तविक बारहसिंघे से कोई साम्य नहीं है। रंगों के प्रति जिस काल्पनिकता का प्रयोग इस चित्र में किया गया है वह अद्वितीय है।

पाठगत प्रश्न 3.8

1. जनगढ़ सिंह श्याम किस आदिवासी शैली के चित्रकार थे?
2. जनगढ़ सिंह श्याम का जन्म कब और कहाँ हुआ?
3. जनगढ़ सिंह श्याम की कला प्रतिभा को सर्वप्रथम किसने पहचाना और कलाकर्म हेतु प्रोत्साहन दिया?
4. कुछ लेखकों ने जनगढ़ सिंह श्याम द्वारा विकसित चित्र शैली को क्या नाम दिया?

आपने क्या सीखा

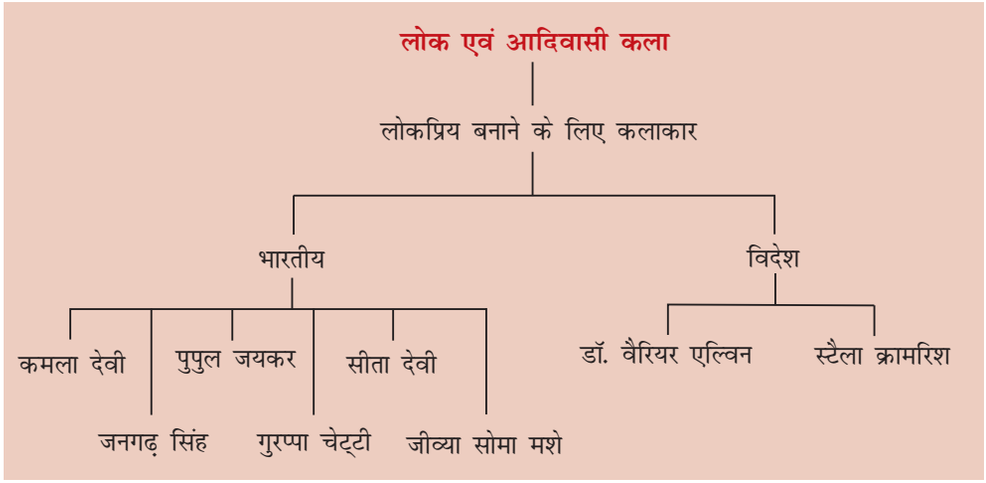

सीखने के प्रतिफल

विद्यार्थियों द्वारा

- विभिन्न कलाकृतियाँ निर्मित करने के लिये विख्यात कलाकारों की विधियों और तत्त्वों का प्रयोग किया जाता है।
- उनके संयोजन में रंग, बनावट, नमूनों, एकता और विविधता का प्रयोग किया जाता है।

पाठांत प्रश्न

1. भारतीय आदिवासी एवं लोककलाओं के विकास एवं प्रचार-प्रसार में किन विद्वानों एवं कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा? उनकी एक सूची तैयार कीजिए।
2. डॉ. वैरियर एल्विन द्वारा आदिवासी संस्कृति पर लिखी पुस्तकों के नाम की सूची बनाइए।
3. स्टैला क्रेमरिश द्वारा 1968 में आयोजित की गई प्रदर्शनी के विषय में टिप्पणी लिखिए।
4. कमला देवी चट्टोपाध्याय ने देशज शिल्प के उत्थान के लिए क्या कदम उठाए?
5. लोककलाओं के उत्थान हेतु श्रीमती पुपुल जयकर ने क्या-क्या के प्रयास किए?
6. मधुबनी शैली की प्रसिद्ध चित्रकार सीता देवी की कला का वर्णन कीजिए।
7. प्रसिद्ध वार्ली चित्रकार जीव्या सोमा मशे की उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।
8. जनगढ़ सिंह श्याम किस आदिवासी चित्र शैली के चित्रकार थे, उनकी बहुमुखी कला प्रतिभा पर प्रकाश डालिए।
9. प्रसिद्ध कलमकारी चित्रकार गुरप्पा चेट्टी ने कौन-सी पुस्तकें लिखी हैं?

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. वे दक्षिण-पूर्व एशिया की कला विशेषज्ञ एवं इतिहासज्ञ थीं।
2. श्री रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने उन्हें शान्ति निकेतन में अध्यापन हेतु आमंत्रित किया था।
3. भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।
4. उनकी लिखी पुस्तके हैं- 'एक्सप्लोरिंग इंडियाज सैक्रेड आर्ट', 'द हिंदू टेंपल', 'अननोन इंडिया', 'रिचुअल आर्ट इन ट्राइब', 'विलेज' आदि

3.2

1. उन्हें भारतीय आदिवासी कला एवं संस्कृति का विशेषज्ञ माना जाता है।
2. उन्होंने मध्य भारत के गोंड एवं बैगा आदिवासियों की कला-संस्कृति पर कार्य किया।
3. उन्हें अपनी पुस्तक 'दि ट्राइबल वर्ल्ड ऑफ़ वैरियर एल्विन' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

3.3

1. (i) मेंगलूरू (कर्नाटक)
2. (i) भारत का शिल्प

3.4

1. उन्होंने 1980 के दशक में फ्रांस, अमेरिका और जापान में भारत महोत्सवों को आयोजन कराया।
2. वे श्रीमती इंदिरा गाँधी एवं श्री राजीव गाँधी की सांस्कृतिक सलाहकार रहीं।
3. उन्होंने राष्ट्रीय हस्तशिल्प एवं हथकरघा संग्रहालय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
4. उनकी लिखी प्रमुख पुस्तकें हैं 'दा अर्दन ड्रम्स' तथा 'टैक्सटाइल्स एण्ड एम्ब्रायडरीज़ ऑफ़ इंडिया।

3.5

1. सीता देवी का जन्म 1914 में बिहार के मधुबनी जिले में हुआ।
2. वे मधुबनी लोकचित्र शैली की चित्रकार थीं।
3. राष्ट्रीय पुरस्कार, बिहाररत्न एवं पद्मश्री सम्मान प्रदान किए गए।

3.6

1. गुरप्पा चेट्टी कलमकारी के प्रसिद्ध चित्रकार हैं।
2. गुरप्पा चेट्टी का जन्म 1937 में आंध्र प्रदेश के श्रीकालाहस्ति में हुआ था।
3. भारत सरकार द्वारा उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार, शिल्पगुरू सम्मान तथा पद्मश्री से सम्मानित किया गया।
4. उन्होंने तेलुगू भाषा में भगवत मणिमाला, व्राथ पानी कलमकारी तथा भारत रतन्माला पुस्तकें लिखी हैं।

3.7

1. (iii) वार्ली चित्रकार
2. (i) महाराष्ट्र

3.8

1. जनगढ़ सिंह श्याम गोंड आदिवासी चित्र शैली के चित्रकार थे।
2. जनगढ़ सिंह श्याम का जन्म 1960 में मध्य प्रदेश के मण्डला जिले के पाटनगढ़ गाँव में हुआ था।
3. जनगढ़ सिंह श्याम की कला प्रतिभा को सर्वप्रथम प्रसिद्ध आधुनिक चित्रकार जगदीश स्वामीनाथन ने पहचाना एवं उन्हें चित्रकारी हेतु प्रोत्साहित किया।
4. कुछ लेखकों ने समकालीन गोंड चित्र शैली को जनगढ़ कलम कहना अधिक पसंद किया।

शब्दकोश

हित चिंतक	:	भला चाहने वाला
आर्थिक उन्नयन	:	समृद्धि
पुनरुद्धार	:	पुनः विकसित करना
अग्रणी	:	आगे रहने वाला
प्रशस्तिपत्र	:	प्रशंसापत्र
हस्तरंजित	:	हाथों से रंग करना